क्यों कहें कहानियाँ

अनुराधा जैन

कहानी सुनने-सुनाने में बच्चों की रुचि होती है। यह एक ऐसा प्रकट और सर्वव्यापी तथ्य है जिस से बच्चों का पालन-पोषण करने वाले अभिभावक भी अवगत होते हैं और उन्हें शिक्षित करने के प्रयासों में जुटे शिक्षक भी। कहानी सुनना-सुनाना शिक्षक और अभिभावक के जीवन में आह्लाद के पल होते हैं। ज़रूरत है कि इस आह्लाद की वज़हों को समझा जाए। कहानियाँ हमें जीवन को समझने और उस का आस्वाद लेने में मदद करती हैं। कहानियाँ हमारे सामने घटनाओं और चरित्रों के बीच सम्बन्ध व्यवस्था को उद्घाटित करती हैं। वह एक साथ मानवीय कर्म के नैतिक, संज्ञानात्मक और भावात्मक पहलुओं को उद्घाटित करती हैं। अगर हम यह समझना चाहते हैं कि कहानी सुनाने से किन शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति होती है तो कहानी के इस मर्म को समझना और उस पर निरन्तर चर्चा करना हमारे लिए ज़रूरी है। इस लेख में अनुराधा ने कक्षा में कहानी सुनाने और उस पर कुछ गतिविधियाँ करने के अपने अनुभवों को लिखा है। लेख पाठक को कहानी के मर्म व शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों और इन दोनों के बीच के गहरे सम्बन्धों पर चर्चा के लिए आमंत्रित करता है। सं.

फाउण्डेशन में फैलोशिप के दौरान मुझे सरकारी विद्यालय में प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के साथ काम करने का मौका मिला। शुरुआत में मुझे बच्चों के साथ समय बिताना था ताकि उन के बचपन की सुलभताओं और जटिलताओं को समझ सकूँ। कुछ किताबों को टटोला यह समझने के लिए कि किस तरह काम की शुरुआत की जाए। *बच्चे की भाषा और अध्यापक* एवं *दिवास्वप्न* दो पुस्तकों ने मुझे राह सुझाई। दोनों ही पुस्तकों में बच्चों के साथ काम करते हुए कहानियों का इस्तेमाल करने पर ज़ोर दिया गया है। *दिवास्वप्न* ने कहानियों के प्रयोग के विभिन्न तरीकों के बारे मे सुझाया और *बच्चे की भाषा और अध्यापक* ने एक समीक्षात्मक नज़रिया दिया।

दोनों ही पुस्तकों ने कहानियों को एक विधा के तौर पर नहीं वरन शिक्षण विधि के रूप में देखने की दृष्टि दी। कुछ काम बच्चों के साथ कहानियों को लेकर किया गया। जिस में सैद्धान्तिक तौर पर भाषा को अर्जित करना, विचार एवं भाषा के अन्तर्सम्बन्धों, अवधारणाओं का निर्माण, भाषा में अर्थ-निर्माण और सन्दर्भों की उपयोगिता को समझने में भी कहानी के माध्यम से कार्य करते वक्त सहायता मिली।

क्यों कहें कहानियाँ

जब भी मैं सांगानेर के सरकारी विद्यालय में बच्चों के साथ भाषा पर काम करने के लिए जाती हूँ तब कक्षा में कहानियाँ सुनाना मेरी कक्षा की प्रक्रियाओं का हिस्सा होती हैं। मैं पहली-दूसरी कक्षा में जब भी जाती हूँ बच्चे एकदम तैयार रहते हैं चीं चीं चूहे की कहानी सुनने के लिए। इस कहानी के संवाद बच्चों को हू-ब-हू याद हो गए हैं। सारे घटनाक्रम याद हैं। नई कहानी सुनाऊँ या नहीं परन्तु यह कहानी हमेशा सुनानी पड़ती है। कुछ तो आकर्षण होता है कहानियों में। कहानियों के साथ किए गए प्रयोगों को *दिवास्वप्न* में जिस प्रकार दर्शाया गया है,

वह कक्षा में कहानियों के उपयोग एवं समझ को बखूबी रख पाता है। बच्चों के बीच कहानियाँ अपनी जगह जल्दी ही बना लेती हैं। कहानियाँ मन में घटनाओं की एक छाप बनाती हैं। वह यह कल्पना कर पाते हैं कि कहानी के पात्र ने किस परिस्थिति में क्या कहा होगा? यह भाषा की प्रकृति और बच्चों की भाषा अर्जित करने की क्षमता को पोषित करती है।

भाषा की समझ और कहानियों की उपयोगिता

भाषा का उपयोग कर पाना मानव की उन बुनियादी क्षमताओं में से एक है, जो उसे जैवकीय तौर पर विकसित प्राणी का दर्ज़ा देती हैं। भाषा, समाज और संस्कृति का एक प्रतिबिम्ब है, जो हमें किसी समाज की खूबसूरत झलकियाँ दिखाता है। भाषा सीखना स्वतः चलने वाली प्रक्रिया है, जिस में सीखने वाले का संज्ञानात्मक रूप से सक्रिय रहना एक अनिवार्य शर्त है। भाषा जीवन्त है, जिस में सन्दर्भों को रचा भी जाता है और गढ़ा भी जाता है।

इस बात में कोई दो राय नहीं कि भाषा सामाजिक संवाद से मुखरित होती है। बच्चों में भाषा सीखने एवं ग्रहण कर पाने की स्वभावगत क्षमता होती है। भाषा का प्रयोग हम अपने अनुभवों को अर्थ देने के लिए करते हैं। जो भी विचार हम गढ़ते या जो भी चिन्तन हमारे मस्तिष्क में चलता है उसे आकार देने के लिए भाषा का प्रयोग करते हैं। यदि हम प्रक्रिया को गूढ़ता के साथ देखें तो हम कुछ ध्वनियों को आत्मसात करते हैं फिर उसे संरचनात्मक खाँचे में डालते हैं और उसी संरचना में मस्तिष्क चीज़ों में समानता-विषमता तलाशता है। कुछ विश्लेषण के पश्चात हम नए अर्थ को ग्रहण करते है। अर्थ ग्रहण करने की इस प्रक्रिया में सन्दर्भ जितना ज्यादा समृद्ध होगा अर्थ निर्माण उतना ही सटीकता के साथ हो सकता है। अर्थ निर्माण निर्वात में नहीं किया जा सकता इसलिए सन्दर्भ गढ़ना एक अनिवार्यता के रूप में दिखता है।

विद्यालयों में खास तौर पर प्राथमिक कक्षाओं में सन्दर्भों को रोचकता के साथ गढ़ने के लिए किन प्रक्रियाओं को शामिल किया जाए, यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न हो सकता है, खासतौर पर जब बात बच्चों के भाषाई कौशलों के विकास की हो, तब इन प्रक्रियाओं एवं गतिविधियों की प्रासंगिकता ज़्यादा प्रभावी हो जाती है। इन विचारों को स्वरूप देने के लिए कहानी एक प्रभावी विधि के तौर पर दिखाई देती है।

कहानियाँ कहना या सुनाना महज़ एक प्रक्रिया नहीं है, यह इंसान के भाषा के साथ जुड़ाव का एक माध्यम है। यह प्राचीन शिक्षण विधियों में से एक मानी जाती है। कहानियों में रचनात्मकता और कल्पनाशीलता के कई अवसर होते हैं। यदि हमारे सेंटर, अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, प्रतापगढ़ पर आने वाले बच्चों की भाषा में कहें तो कहानियाँ मज़ेदार होती हैं। ऐसा लगता है कि सब कुछ उन की आँखों के सामने चल रहा है। कई व्यंग्य आते हैं जो उन्हें खूब हँसाते हैं। कहानियों का संसार इतना रोचक और बड़ा है कि सभी इस की दुनिया से जुड़ जाते हैं। सभी के लिए इस में जगह है। यदि भाषा सीखने-सिखाने के नज़रियों से समझने की कोशिश करें तो कहानियाँ भाषा को समृद्ध बनाने का काम करती हैं। इस में घटनाक्रमों के कई रोचक मोड़ होते हैं, जो बाँधकर रख पाते हैं।

अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन ने राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले में लर्निंग रिसोर्स सेंटर खोला। बच्चों ने वहाँ आकर पुस्तकालय की किताबों को देखना, जानना और समझना शुरू किया। किताबों की बेतरतीबी से अन्दाज़ा लगाया कि किताबें उन्हें मज़ेदार लग रही हैं। किताबों से कुछ दोस्ती तो हुई है। उन के लिए भी यह एक नया अनुभव था। सेंटर मे ढेर सारी किताबें हैं, रंग-बिरंगी, चित्रों वाली, जिन में एकलव्य, सीबीटी, एनबीटी, एनसीईआरटी सभी प्रकाशन की किताबें हैं। मुझे लगा कि इन के साथ क्या काम किया जाए, जिसमें हर उम्र के बच्चे जुड़ पाएँ और उन की रुचि भी बनी रहे। कहानियों से बेहतर विकल्प मुझे नजर नहीं आया। मैंने सोचा

यह था कि छोटे बच्चों को मैं कहानियाँ सुनाऊँगी और बड़े बच्चों की मदद से कुछ लोककथाओं का संग्रह बनाने की कोशिश करूँगी, जिन्हें बाद में नाटक बनाने के लिए इस्तेमाल करेंगे। बच्चों के साथ काम करते वक्त पहले से कुछ तय करना हमेशा काम नहीं करता। बच्चों से पहले दिन मैंने बात की। किस तरह की कहानियाँ उन्होंने अपने बड़ों से सुनी हैं, खास तौर पर उस तरह की कहानियाँ जो उन की अपनी भाषा में हों। बच्चों के उत्तर आए कि हम ने अपने घर के बड़ों से कहानियाँ कभी नहीं सुनी हैं। यह एक तरह का आश्चर्य भी था और मेरे लिए एक समस्या भी। अब संग्रह तो दूर की बात है, अभी तो कहानियों से जोड़ने की ज़रूरत है। इसी को ध्यान मे रखकर मैंने बुन्देलखण्डी कहानियों से शुरुआत की। पहले दिन बच्चों को 'मिजबान' कहानी सुनाई और बड़े बच्चों को कहा कि कहानियों के बारे में लिखो वह तुम्हें क्यों अच्छी लगती हैं? बच्चों ने लिखा कि कहानी हमें मजेदार लगती है, उन में हास्य के वाक्य आते हैं, जब हम कहानी पढ़ रहे होते हैं तो ऐसा लगता है कि सारी चीजें हमारे सामने चल रही हैं।

इस क्रम को बरकरार रखते हुए मैंने 'लल्लू चोर' की कहानी सुनाई और बच्चों के सामने सवाल रखा क्या इस कहानी को तुम अपनी भाषा में बदलकर लिख सकते हो? बच्चों ने कहा कि हम कोशिश कर सकते हैं। एक बच्चे पीयूष ने कहानी को मालवी में लिखा। बुन्देली शब्दों को मालवी भाषा में बदलकर कहानी के अन्दर डाला गया। कहानी कहते-कहते सेंटर पर कुछ प्रक्रियाओं को भी तय किया गया जिस में बच्चों ने भागीदारी भी की। बड़े बच्चों ने ज़िम्मदारी ली कि छोटे बच्चों को किताबों में से कहानियाँ पढ़कर सुनाएँगे। बच्चों ने मिलकर तय किया कि सेंटर मे शान्ति रखेंगे और जो शोर करेंगे हम उन को मना कर देंगे। इसी प्रकार 'मिन्दो मिन्दरिया' की बुन्देली कहानी के बाद मैंने बच्चों से कहा कि तुम भी मालवी में कोई कहानी सुनाओ। एक बच्चे ने एक हिन्दी की कहानी को मालवी में रूपान्तरित करके सुनाया। एक भाषा से दूसरी भाषा तक का सफर तय करना कहानियों के कारण ही सम्भव हो पाया। कहानियों के माध्यम से जो कुछ घटित हुआ है, उस ने भाषा गढ़ने का स्थान स्वतः ही बना लिया।

1. प्राथमिक कक्षाओं में कहानियाँ एक सहज अभिव्यक्ति का माध्यम

जब बच्चे विद्यालय की प्राथमिक कक्षाओं में आते हैं, तब विद्यालय का वातावरण उन के सहज स्वभाव से विपरीत होता है। बच्चे स्वभाव से ही सहज तौर पर अपनी बातों को अभिव्यक्त कर पाते हैं। लेकिन विद्यालय का औपचारिक माहौल उन्हें यह अवसर कम ही दे पाता है। विद्यालय की एक संस्थान के तौर पर अपनी सीमाएँ हो सकती हैं। इस परिस्थिति में शिक्षक को कुछ प्रक्रियाएँ तय करनी पड़ती हैं, जिन के माध्यम से वह शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर कक्षा-कक्ष में भाषाई कौशलों पर काम कर सकें। कहानियों के माध्यम से भाषा के कौशलों पर काम करना एक सहज माध्यम हो सकता है। कहानी में कहे गए संवाद बच्चों को पूरा सन्दर्भ प्रदान करते हैं, जिस से अर्थ निर्माण होता है। यह तथ्य काफी रोचक है कि किसी भी कही गई कहानी को बच्चे स्वयं की भाषा में इस प्रकार सुनाते हैं कि कहानी का अर्थ और मूल घटनाक्रम नहीं बदलता।

कक्षा-कक्ष में कहानियाँ

कक्षा दूसरी के बच्चों को मैंने सोना मौसी, एक बिल्ली की कहानी सुनाई। जिस में बन्दर, खरगोश, कछुआ और बिल्ली यानी सोना मौसी थी। बच्चों को कहानी सुनाने के बाद इतना ही कहा– क्या हम इस कहानी का नाटक भी बना सकते हैं? अगले दिन विद्यालय में बच्चे तैयारी के साथ आए थे। उन के पास सोना मौसी की साड़ी भी तैयार थी। सभी ने आपस में राय कर के अपने पात्र तय किए और नाटक के तौर पर कहानी का मंचन किया। पात्रों के संवाद से लेकर, हाव-भाव तक सभी कुछ बच्चों की स्वयं

की रचना थी। बाकी बच्चे जो कहानी के मंचन में शामिल नहीं थे, उन्होंने संवाद बोलते समय उन बच्चों की सहायता की। सुनी कहानी में पात्रों के संवाद, पात्रों की पोशाक का निर्धारण सभी कुछ बच्चों ने स्वयं किया। यहाँ कहानी को एक माध्यम के तौर पर इस्तेमाल किया गया, जिस ने बच्चों को स्वतंत्र अभिव्यक्ति का माध्यम प्रदान किया। इस प्रक्रिया में बच्चों ने सुनी हुई कहानी का अर्थ ग्रहण करते हुए उसे अपने शब्दों में सुनाया। बच्चों द्वारा इस प्रकार भाषा का प्रयोग करना अचम्भा-सा लगता है।

नॉम चोम्स्की का तर्क था, कि बच्चों में भाषा सीखने, अर्जित करने की जन्मजात क्षमता होती है। उन के मस्तिष्क में लैंग्वेज एक्यूजिशन डिवाइस होता है। उन के मस्तिष्क में व्याकरण की जटिल संरचनाओं का साँचा पहले से मौजूद होता है। बच्चे तीन साल की उम्र में ही भाषा की जटिल संरचनाओं को समझ पाते हैं एवं संवाद में उन का प्रयोग भी करते हैं। कक्षा-कक्ष में बच्चों की अभिव्यक्ति को स्थान देकर कई अवधारणाओं को विकसित किया जा सकता है। जिस में उन के पूर्व-अनुभव भी समझ के विस्तार में मदद करते हैं। कहानी सुनाने से भाषा के साथ उन का जुड़ाव बन पाता है। बड़े धैर्य के साथ बच्चे कहानी को सुनते हैं और उसी जीवन्तता और नैसर्गिकता के साथ नए-नए शब्दों से परिचित हो पाते हैं। कहानी बच्चों को जो रोचक सन्दर्भ देती है, वह आगे पढ़ने-लिखने की अमूर्त अवधारणाओं को सीखने में मदद करते हैं। कहानी के शब्दों की ध्वनि संरचना और लिखित संरचना के बीच सम्बन्ध स्थापित हो पाता है, साथ ही चिन्तन की प्रक्रिया में बच्चे शामिल होते हैं इसलिए मौलिक रूप से कुछ भाषा को गढ़ पाना सम्भव हो पाता है। इस प्रक्रिया में निहित अर्थ में परिवर्तन नहीं होता है।

सांगानेर के सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय में कक्षा दूसरी का अनुभव

चिन्तन प्रक्रिया में कहानी की उपयोगिता

मस्तिष्क में आने वाले विचार एवं अर्मूत चिन्तन भाषा की संरचना में ही बुने जाते हैं। इन विचारों के बीच में आपसी सम्बन्ध होते हैं। कहानियों में घटनाओं और विचारों की जो तारतम्यता होती है, वह जटिल अमूर्त चिन्तन के लिए अवसरों को भी खोल सकती है। कहानी में चिन्तन, तर्क एवं कल्पनाशीलता के अवसर दिए जा सकते हैं।

मैं उच्च प्राथमिक विद्यालय में कक्षा सातवीं के बच्चों के साथ जयशंकर प्रसाद की कहानी 'छोटा जादूगर' पर काम कर रही थी। यह कहानी उन के पाठ्यक्रम में शामिल थी। कहानी ख़त्म होने के बाद उन को एक प्रश्न दिया गया कि छोटा जादूगर की ज़िन्दगी में आगे क्या हुआ होगा? शुरुआत में बच्चों को थोड़ी उलझन हुई, लेकिन उन्होंने तय किया कि एक बार हम पूरी कहानी पढ़ते हैं फिर हम सोचेंगे कि क्या हुआ होगा। बच्चों ने कहानी में 'छोटा जादूगर' के बारे में दी गई जानकारियों को लिखा, फिर अन्दाज़ा लगाया कि छोटा जादूगर अपनी माँ के गुज़र जाने के बाद क्या कर रहा होगा?

कहानी पर किए काम का यह अंश तार्किकता को ध्यान में रखकर चिन्तन को प्रेरित करता दिख रहा है। कक्षा-कक्ष में कहानियों का इस्तेमाल मौलिक चिन्तन और कल्पनाशीलता को बढ़ाने के लिए भी किया जा सकता है। यह सोच पाना कि किस प्रकार के व्यक्तित्व के साथ ज़िन्दगी में क्या-क्या घटा होगा, इस बात की तरफ इशारा करता कि बच्चे है किस प्रकार का चिन्तन कर पा रहे हैं। किस प्रकार के विचार उनके मन में उमड़ रहे हैं। इन विचारों के बीच में क्या सम्बन्ध दिखाई दे रहा है। इस प्रकार के अवसर महज़ कहानी के प्रश्नों के जवाब रटकर लिखने की प्रवृत्ति से हटकर स्वयं चिन्तन कर के लिखने की प्रवृत्ति को विकसित कर सकते हैं। जो बच्चों में तार्किकता, चिन्तन और कल्पनाशीलता को मुखर बनाता है। इसी प्रकार कक्षा- 6 की बालिका प्रियंका ने मनोहर की कहानी को उसी तार्किकता के साथ आगे बढ़ाया, जिस प्रकार कक्षा- 7 की बालिकाओं ने

छोटा जादूगर की कहानी को आगे बढ़ाया था।

जादू के मैदान का मालिक छोटा जादूगर

'छोटा जादूगर' ने वापस उसी मैदान पर जादू दिखाना शुरू किया। धीरे-धीरे उस के काम से लोग प्रभावित होने लगे। छोटा जादूगर ने बहुत मेहनत की। धीरे-धीरे उस ने वही जादू का मैदान खरीद लिया। कुछ दिन बाद उस के पिता भी जेल से बाहर आ गए और वह भी छोटा जादूगर की मदद करने लगे। उस के बाद छोटा जादूगर का घर बन गया। उस ने शादी कर ली और खुशी-खुशी अपने परिवार के साथ रहने लगा। कहानी को आगे बढ़ाने के इस काम में बच्चों ने इस बात को इस प्रकार समझा, कि छोटा जादूगर ईमानदार और मेहनत करने वाला लड़का है इसलिए उस के साथ अच्छा होना चाहिए। उस के जादू के खेल बड़े निराले और मज़ेदार होते हैं। इन सब बातों को ध्यान में रखकर छोटा जादूगर की आगे की ज़िन्दगी को बच्चों ने देखा। उन का चिन्तन इसी तर्क पर आधारित था, कि छोटा जादूगर मेहनती और ईमानदार लड़का है। इसलिए अपनी ज़िन्दगी में उसे कामयाबी मिलनी चाहिए। छोटा जादूगर का उसी मैदान को खरीदना जहाँ वह जादू दिखाता था, उस की कामयाबी को और पुख्ता रूप से दिखाता है।

राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय सांगानेर ओल्ड, जयपुर कक्षा सातवीं का अनुभव-

2. भाषाई कौशलों के विकास में कहानियों की भूमिका

भाषा को जब हम कौशल के तौर पर देखते हैं, तब हम इसे लिखित और मौखिक के दायरों में बाँटकर देख पाएँगे। जिन्हें हम चार श्रेणियों मे विभाजित कर देते हैं– सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। सुनने और बोलने को हम जैवकीय शारीरिक क्रिया से हटाकर यदि कौशल के रूप में देखते हैं तो कुछ बुनियादी अन्तर होना चाहिए। कौशलों के दायरों में देखें तो सुनने और बोलने में समझ निहित है। यह समझ व्यापकता के साथ अर्थ का निर्माण करती है। पढ़ने और लिखने के बुनियादी कौशल में लिखित विषयवस्तु को पढ़कर उस का मर्म समझ पाना और अपने शब्दों में अपने विचारों को लिख पाना आदि शामिल होना चाहिए। सिर्फ लिखित विषयवस्तु को टुकड़ों-टुकड़ों में पढ़कर डीकोड करना पढ़ने का सही अर्थ नहीं दे पाता है। इन सभी बातों को थोड़ा और गहराई से देखें तो चिन्तन एवं विचारों की भूमिका यहाँ भी देखी जा सकती है। कहानी में लिखने-पढ़ने की आरम्भिक गतिविधियाँ भी शामिल की जा सकती हैं और मौलिक लेखन के अवसर भी निकाले जा सकते हैं। कहानी से शब्द, वर्ण एवं मात्राओं की अवधारणाओं पर आसानी से काम किया जा सकता हैं। चीं चीं चूहे की कहानी सुनाने के बाद कक्षा में अलग-अलग कक्षा के बच्चों को अलग-अलग काम दिया। पहली व दूसरी के बच्चों के साथ उन चीजों की सूची बनाई जो चीं चीं को उन के गाँव में दिखाई देतीं। तीसरी से पाँचवीं के बच्चों को इस प्रश्न का उत्तर लिखने को कहा कि यदि चीं चीं तुम्हारे घर में आए तो तुम क्या करोगे?

कहानी में आए शब्दों से बच्चों का परिचय लिखित तौर पर करवाना, कहानी के पात्रों के बारे में बात करना और नाटक के रूप में कहानी का चित्रण करने की गतिविधियाँ ऐसे कई अवसर देती हैं, जिसमें हम बच्चों को सहजता के साथ भाषाई कौशलों से जोड़ सकते हैं। कहानी सुनाते वक्त अक्सर बच्चे उस कहानी को अपनी कॉपी में दर्ज करना चाहते हैं, उन को श्रुतलेखन के माध्यम से कहानी लिखवाई जा सकती है। इस के अलावा आधी कहानी लिखकर उस के अन्त पर बच्चों से चर्चा की जा सकती है।

कई चित्र कहानियों का इस्तेमाल भी कक्षा में किया जा सकता है। कई तरह के रास्ते कहानियों के माध्यम से निकाले जा सकते हैं।

3. कहानी में शिक्षकों एवं विद्यालय की भूमिका

अक्सर विद्यालयों में कहानी प्रार्थना सभा का

हिस्सा होती है जिन का उद्देश्य बच्चों को मूल्य सिखाना हो सकता है। इन मूल्यों को बच्चे कितना सीख पाते हैं या क्या उन्हें इस तरीके से मूल्य सिखाए जा सकते हैं, इस सवाल पर चर्चा की जा सकती है। परन्तु अगर भाषाई कौशलों के विकास के नज़रिए से देखें तो कहानियाँ कक्षा की प्रक्रियाओं का हिस्सा कम ही बन पाती हैं। शिक्षक की निर्भरता भी अधिकांशतः पाठ्यपुस्तक की कहानियों तक रह जाती है। कहानी, जो भावों की यात्रा जैसी होती है, वह महज पाठ की गतिविधियों को पूरा कराने का माध्यम बन जाती है।

कहानी को एक शिक्षण विधि के तौर पर देखने के लिए, शिक्षक का स्वयं के स्तर पर तैयारी करना बेहतर होता है। कहानी को रोचक बनाने के लिए पुतलियों का इस्तेमाल किया जा सकता है। बच्चों से कहानियों के चार्ट बनवाए जा सकते हैं। स्वयं कहानी बनाने के लिए बच्चों को प्रेरित किया जा सकता है। कक्षा-कक्ष में कहानियों को स्थान देने के लिए शिक्षक उदार नज़रिया अपना सकते हैं।

कहानी का प्रयोग एक शिक्षण विधि के तौर पर करने के लिए शिक्षक की स्वयं की तैयारी भी उतनी ही आवश्यक है। कहानी कहकर उस पर प्रश्नोत्तर बनाकर याद करवा देना, बच्चों को शायद चिन्तन के उतने अवसर न दे, जितने कि कहानी में निर्णय लेने, कल्पना करने या अनुमान लगाने जैसे कार्यों में दिया जा सकता है। यह ज़रूरी नहीं है कि कहानी की पठकथा को हू-ब-हू सुनाया जाए जैसा कि शिक्षक ने स्वयं पढ़ा है। सोना मौसी की कहानी बच्चों को सुनाते हुए उन्हें यह मौका दिया कि वह तय करें कि सारे जानवरों को सोना की मदद करनी चाहिए या नहीं। बच्चों का पहला जवाब यही था कि करनी चाहिए क्योंकि वह मुसीबत में है। उस के बाद जब सवाल किया कि जब आप की कोई मदद नहीं करता तब क्या आप उस की मदद करते हो? बच्चों का जवाब था नहीं। फिर बाकी जानवरों को सोना की मदद क्यों करनी चाहिए? बच्चों ने थोड़ा सोचा और कहा कि जब कोई ज़्यादा मुसीबत में होता है, तो फिर हम उस की मदद करते हैं। यदि जानवरों ने सोना को नहीं बचाया तो वह मर सकती है और हो सकता है इस के बाद सोना का मन बदल जाए और वो सब की मदद करने लगे। इस कहानी को इसी प्रकार खत्म किया गया। इस का अन्त क्या होना चाहिए यह बच्चों ने स्वयं तय किया। जो उन के निजी अनुभवों के करीब और वास्तविक कहा जा सकता है। इसी प्रकार कई छोटी-छोटी गतिविधियाँ या प्रश्न कहानियों में डाले जा सकते हैं। शिक्षक यदि बच्चों को सोचने और तर्क करने की आजादी दें तो बच्चों को चिन्तनशील एवं संवेदनशील मानव के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

तैयारी का पहला कदम कहानियों का संग्रह करना है दूसरे कदम में कहानी के इर्द गिर्द कुछ गतिविधियों को बनाना, कहानियों को रोचकता के साथ प्रस्तुत करना और कहानी के माध्यम से संवाद के मौके तलाशना है, जो बच्चों को मौलिकता के साथ चिन्तन करने को प्रेरित कर सकता है। इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए, बच्चों को स्वयं कहानी या कविता लिखने के अवसर दिए जा सकते हैं। बच्चों का लेखन देखते समय शिक्षक अक्सर मौलिकता से ज्यादा व्याकरण और मात्राओं पर ध्यान देते हैं। बच्चों की सहज गलतियों के लिए वे कोई जगह नहीं देख पाते। जीन प्याजे की संज्ञानात्मक विकास की प्रक्रिया के सिद्धान्त के अनुसार बच्चे अपने मस्तिष्क में विभिन्न कोटियों का निर्माण करते हैं, इस प्रकार वह नए ज्ञान का निर्माण करते हैं। वयस्क, बच्चों को स्केफोल्डिंग के माध्यम से उनके सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में आवश्यक सहायता प्रदान करते हैं, ताकि उन के ज्ञान का विस्तार हो सके।

विद्यालय में कहानियों के माध्यम से बच्चों को पढ़ने-लिखने के अवसर दिए जा सकते हैं। अलग-अलग प्रकार की कहानियों के लिए बाल पुस्तकालय एक कारगर तरीका हो सकता है। ऐसे बाल पुस्तकालय विद्यालय स्तर पर ही चलाए जा सकते हैं जिस की ज़िम्मेदारी

बच्चों को सौंपी जा सकती है। विद्यालय एक संस्थान के तौर पर कहानी के माध्यम से बच्चों में लिखने-पढ़ने के कौशल को विकसित कर सकते हैं। कहानी सिर्फ मूल्य या मनोरंजन का हिस्सा न रहे बल्कि सीखने की प्रक्रियाओं का हिस्सा भी बन सकती है।

सन्दर्भ

गिजुभाई, *दिवास्वप्न*, दक्षिणमूर्ति बालमन्दिर भावनगर गुजरात

तेत्सुको कुरोयांगी, *तोत्तोचान द लिटिल गर्ल एट द विंडो*, अनु. डोरोथी ब्रिटन

कृष्ण कुमार, *राज समाज और शिक्षा* पुस्तक के कुछ अंश

कृष्ण कुमार, *बच्चे की भाषा और अध्यापक*

मुस्कान संस्था के वीडियो

एकलव्य प्रकाशन की पुस्तकें

दिगन्तर प्रकाशन की भाषा श्रृंखला सीरीज

जॉन हॉल्ट, *समरहिल* के कुछ अंश

मुस्कान संस्था, भोपाल के कार्य के कुछ वीडियो

पढ़ने की समझ, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

"Language acquisition and language learning : developing the system of external and internal perspective"

Paper presented at the 52nd International Scientific Conference of Daugavpils University, Daugavpils, Latvia. April 15, 2010.

Lev Vygotsky, *Thought and Language*, translation newly revised and edited by Alex Kozulin

---

अनुराधा जैन पिछले एक दशक से समुदाय के साथ शिक्षण एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में सक्रिय रही हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन सागर, मध्यप्रदेश में बतौर रिसोर्स पर्सन कार्यरत हैं। सम्पर्कः anuradha.jain@azimpremjifoundation.org